TEACHERS OF BIHAR

प्रकृति प्रहरी

LET'S GREEN BIHAR

विशेष आकर्षण

- E-waste: नए युग का कचरा
- एक बूंद की यात्रा
- फल्गु की कहानी, गया जी की जुबानी
- इको फ्रेंडली विद्यालय

SCAN
To Read

खंड :1 अंक :2

www.teachersofbihar.org/prakritiprahari

प्रकृति प्रहरी शपथ

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि
मैं धरती माता की रक्षा हेतु
एक सजग प्रकृति प्रहरी बनकर
कार्य करूँगा/करूँगी।
मैं वृक्षारोपण एवं संरक्षण करूँगा/करूँगी,
जल की प्रत्येक बूँद बचाऊँगा/बचाऊँगी,
प्लास्टिक का त्याग करूँगा/करूँगी तथा
कचरे का सही प्रबंधन अपनाऊँगा/अपनाऊँगी।
मैं जीव-जंतुओं के प्रति दयाभाव रखूँगा/रखूँगी
और ऊर्जा की बचत करूँगा/करूँगी।
मेरा उद्देश्य एक स्वच्छ, हरित और
सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना है।
मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि
मेरे विचार और कार्य सदैव
पर्यावरण के अनुकूल होंगे।

कॉपीराइट सूचना

प्रकृति प्रहरी एक त्रैमासिक ई-शैक्षिक पत्रिका है, जिसका प्रकाशन टीम प्रकृति प्रहरी, टीचर्स ऑफ बिहार (Teachers of Bihar) द्वारा किया जाता है। इस पत्रिका का उद्देश्य पर्यावरण को सुरक्षा, उसके बचाव और बेहतर बनाने में किए जा रहे प्रयास से जुड़े अनुभवों, नवाचारों तथा प्रकृति के विभिन्न पहलुओं जिनका पर्यावरण के लिए आपका जानना आवश्यक है, को पाठकों तक पहुँचाना है तथा जमीनी स्तर पर प्रकृति प्रहरी तैयार करना है।

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख, कहानियाँ, चित्र तथा अन्य सामग्री के सर्वाधिकार संबंधित लेखक एवं प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। टीचर्स ऑफ बिहार की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका के किसी भी भाग को किसी भी रूप में—जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य माध्यम से—पुनः प्रकाशित, संग्रहित या प्रसारित करना प्रतिबंधित है।

यह पत्रिका केवल पठन एवं शैक्षिक उद्देश्यों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है। इसका किसी भी प्रकार से व्यावसायिक उपयोग या विक्रय करना वर्जित है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखक/रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं। इनके लिए पूर्णतः लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं; इन विचारों से प्रकाशक या संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकृति प्रहरी टीम

संरक्षक

महताब रहमानी
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद

संपादक

अभिषेक कुमार
उ.म.वि. गोपालपुर नेउरा,
सैरया, मुज़फ्फरपुर

सह संपादक

सिद्धांत जी
प्रो. मध्य विद्यालय ईटहरी
फुल्लीडुमर, बाँका

प्रिया कुमारी
उ० मध्य विद्यालय औराही,
गम्हरिया, मधेपुरा

मार्गदर्शन एवं प्रेरणास्त्रोत

श्री शिव कुमार
फाउंडर
टीचर्स ऑफ बिहार

श्री शिवेंद्र प्रकाश सुमन
टेक्निकल टीम लीडर
टीचर्स ऑफ बिहार

श्री केशव कुमार
इवेंट लीडर
टीचर्स ऑफ बिहार

प्रकृति प्रहरी टीम

डिजाइनिंग टीम

कुमार अभिषेक
उ० म० वि० सलेमपुर ढाब, कांटी
मुजफ्फरपुर

सुमित कुमार
राजकीय कन्या मध्य विद्यालय
भभुआ-18, कैमूर

अमितेश कुमार
रा. बुनियादी विद्यालय रेपुरा
मुजफ्फरपुर

मनीष मणि
प्रा० वि० मुरा हरलोचनपुर,
सकरा, मुजफ्फरपुर

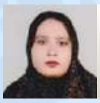

इशरत परवीन
उ. म. वि. मरवान खुर्द उर्दू
मुजफ्फरपुर

पप्पू कुमार पंकज
प्राथमिक विद्यालय अदलपुर
मुजफ्फरपुर

कंटेंट राइटिंग टीम

उर्मिला कुमारी
उच्च मा० वि०, चैता दक्षिण
उजियारपुर, समस्तीपुर

स्वराक्षी स्वरा
मध्य विद्यालय हाजीपुर
आवासबोर्ड खगड़िया

मिथलेश कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय डीह
गौरीहार, सकरा, मुजफ्फरपुर

नीरज कुमार झा
उ० उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भवानीपुर नारायणपुर भागलपुर

निवेदिता चौरसिया
नव० प्रा० वि० हरिजन टोला,
कलगीगंज, भागलपुर

सतीश कुमार
उ० मध्य वि० रामखेतरी हिंदी
औराई, मुजफ्फरपुर

अपराजिता कुमारी
प्रा० वि० वलीपुर हरिजन टोला
पाली गंज, पटना

विकास कुमार साव
प्र० वि० चाँन्दोडीह,बेलहर
बांका

डॉ. राजीव रंजन सिंह
मध्य विद्यालय चिन्तावन
बिगहा, कुटुंबा, औरंगाबाद

पाठ शोधक

शोभा सिंह
कृत्यानंद मध्य विद्यालय
मलयपुर जमुई

ज्योति कुमारी
प्रा. शि. शिक्षा महाविद्यालय
पोरवैरा, मुजफ्फरपुर

डॉ स्नेहलता द्विवेदी
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज, कटिहार

मीडिया टीम

रंजेश कुमार
प्रदेश प्रवक्ता
टीचर्स ऑफ बिहार

मृत्युंजय कुमार
प्रदेश मीडिया संयोजक
टीचर्स ऑफ बिहार

कुमारी प्रेरणा
प्राथमिक विद्यालय भरतनगर,
गायघाट मुजफ्फरपुर

प्रकृति प्रहरी टीम

जिला कॉर्डिनेटर

रंजना कुमारी
उ० म० वि० मानिकपुर, मधेपुरा

पुनीता वर्मा
मध्य वि० सिंगरहिया I
बथनाहा सीतामढ़ी

शोभा सिंह
कृत्यानंद मध्य विद्यालय
मलयपुर जमुई

शोभा तिवारी
मध्य विद्यालय घिरसिंडी
नबीनगर, औरंगाबाद

रोहित दुबे
कन्या मध्य विद्यालय,
बेगमपुर, पटना सदर,पटना

मुकेश कुमार
उ० मा० वि० कोरिया, चांदन
बाँका

प्रमोद कुमार
सरस्वती विद्या निकेतन (माडल स्कूल), +2 जिला स्कूल गया जी

मो० मेराज
रा० प्रा० मकतब कबई नयाटोल
विद्यापतिनगर, समस्तीपुर

दुर्गमांगे उपाध्याय
नव० प्रा० वि० बिट्ठलपुर
बक्सर

अमृता कुमारी
उच्च मा० विद्यालय बसंतपुर
सुपौल

तारकेश्वर ठाकुर
प्रा० वि० हाजीपुर दक्षिण टोला,
शाहकुण्ड, भागलपुर

विभा सिंह
प्रा० विद्यालय रूपौली मुशहरी
रूपौली, पूर्णिया

संजय कुमार
मध्य विद्यालय साड़ोव
हवेली खड़गपुर, मुंगेर

विनय कुमार
मध्य विद्यालय जुआफर,
भगवानपुर हाट, सिवान

विप्लव शांडिल्य
मध्य विद्यालय अरिहाना
कटिहार

महेश कुमार
कन्या मध्य विद्यालय तेतरिया
पूर्वी चंपारण

गौरव कुमार
रा० मध्य विद्यालय प्रेमजीवर
बहादुरपुर, दरभंगा।

रितेश कुमार
उर्दू प्राथमिक विद्यालय, पिपरा
देवस, बरौनी, बेगूसराय

सह-संपादक की कलम से

प्रकृति के सजग प्रहरियों,

प्रकृति हमें हर दिन बिना किसी अपेक्षा के जीवन देती है, इसलिए हम इस 'धरा' को 'धरती माँ' कहते हैं। जरा सोचिये क्या होगा उस दिन, जब किसी बच्चे को पेड़, नदी, या किसी पौधे के विषय में बताते हुए यह कहना पड़े कि - "यह कभी हमारी धरती की पहचान हुआ करते थे"। क्या होगा जब हमें एक बूंद पानी का महत्व तब समझ आए जब हमें उसके लिए तरसना पड़े? और क्या हमने कभी सोचा है हमें सुख-सुविधा देने वाली उपकरण हमारी धरा की मुस्कान छीन रही है?

प्रकृति प्रहरी का यह अंक आपसे इन्हीं प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा करता है। इस अंक में समाहित 'एक बूंद की यात्रा' हमें जल का मूल्य समझाती है, 'विलुप्त होते पौधे व पक्षी' हमें हमारी अनमोल धरोहर से परिचित करवाते हैं, 'ई-वेस्ट' हमें एक जिम्मेदार उपभोक्ता बनने का संदेश देती है और 'डिजिटल उपवास' हमें कुछ पल प्रकृति की गोद में बिताने की प्रेरणा देती है।

यह अंक केवल जानकारी देने का प्रयास नहीं, बल्कि हमारी धरा को धड़कन से लगाने की एक विनम्र गुहार है। यदि इसे पढ़ने के बाद आपके मन में कोई एक विचार बदले, कोई एक आदत सुधरे या प्रकृति के सम्मान में एक छोटा सा कदम भी उठे, तो हमारा प्रयास सफल होगा। हमारे पूज्य 'महात्मा गांधी' ने कहा था -

> "The Earth provides enough to satisfy every man's needs,
> but not every man's greed."

सह-संपादक
प्रिया कुमारी
उ० मध्य विद्यालय औराही,
गम्हरिया, मधेपुरा

शुभकामना संदेश

गिरिराज सिंह
GIRIRAJ SINGH

सत्यमेव जयते

वस्त्र मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF TEXTILES
GOVERNMENT OF INDIA

शुभकामना संदेश

प्रकृति प्रहरी केवल एक नाम नहीं, बल्कि प्रकृति, पर्यावरण और मानव जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने का एक सशक्त संकल्प है। आज जब पर्यावरण संरक्षण वैश्विक आवश्यकता बन चुका है, तब जन-जागरूकता का प्रत्येक प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुझे विश्वास है कि प्रकृति प्रहरी अपने निष्पक्ष, सकारात्मक एवं जनहितकारी प्रयासों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता के संवर्धन, जल संरक्षण, स्वच्छता तथा सतत विकास के प्रति समाज में नई चेतना का संचार करता रहेगा।

प्रकृति की रक्षा ही मानवता की सुरक्षा है। आप सभी राष्ट्र निर्माण और प्रकृति संरक्षण के इस पावन अभियान में निरंतर सफलता प्राप्त करें तथा समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते रहें। मैं प्रकृति प्रहरी के समस्त संपादक मंडल, पत्रकार साथियों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(गिरिराज सिंह)

Office : Room No. 5605, 5th Floor, GPOA-3, Netaji Nagar, New Delhi-110023
Tel. : 011-20903582, **E-mail :** minister.textiles@gov.in

शुभकामना संदेश

सहायक निदेशक, जन शिक्षा की कलम से

श्रीमति प्रिया भारती
सहायक निदेशक
जन शिक्षा, शिक्षा विभाग

. 'प्रकृति प्रहरी' ई–पत्रिका के द्वितीय अंक के सफल प्रकाशन पर पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवं हरी-भरी शुभकामनाएँ!

भागदौड़ भरी जिंदगी, वायु प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्याओं के बीच, बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षकों द्वारा छात्र-छात्राओं और समाज को जागरूक करने का यह प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय, अतुलनीय व अनुकरणीय है।

यह ई–पत्रिका केवल एक संकलन नहीं, बल्कि प्रकृति का दर्पण है जो भविष्य में पर्यावरण संरक्षण के लिए वरदान और एक मिसाल साबित होगी।

इस सराहनीय पहल के लिए संपादकीय टीम व सभी प्रकृति प्रहरियों को ढेरों शुभकामनाएँ।

जिला शिक्षा पदाधिकारी, औरंगाबाद की कलम से

श्री दयाशंकर सिंह
जिला शिक्षा पदाधिकारी
औरंगाबाद

पर्यावरण चेतना को समर्पित पत्रिका 'प्रकृति प्रहरी' के दूसरा अंक प्रकाशित होने पर सम्पूर्ण संपादक मंडल एवं सहयोगी टीम को बहुत बहुत बधाई।

आज जहां मानव के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध इस्तेमाल हो रहा है, उस दौर में टीम प्रकृति प्रहरी का एक प्रयास निश्चित ही बच्चों, अभिभावकों एवं आम जनमानस को पर्यावरण संरक्षण के कार्यों से जोड़े रखने में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका में जिस गंभीर विषयों पर चर्चा की गई है, उसके महत्व को हम सभी समझेंगे और प्रकृति प्रहरी के प्रयास को सफल बनाएंगे। प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन बनाए रखना आज हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। ऐसे में विद्यार्थियों के भीतर प्रकृति-प्रेम का भाव जगाना और उन्हें पर्यावरण का सच्चा प्रहरी बनाने हेतु यह एक अनुकरणीय पहल है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक पाठकों को हरियाली बचाने और स्वच्छता अपनाने के लिए नया उत्साह देगा।

मुझे विश्वास है कि इस अभियान के औरंगाबाद जिला समन्वयक श्रीमती शोभा जी के नेतृत्व में हम सभी इसे जन जन तक पहुंचाएंगे।

शुभकामना संदेश

जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, सीतामढ़ी की कलम से

पर्यावरण जागरूकता और छात्र-सहभागिता को समर्पित पत्रिका 'प्रकृति प्रहरी' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

वर्तमान समय में प्रकृति और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना केवल हमारी जिम्मेदारी ही नहीं, बल्कि हमारी जीवन-रक्षा का मुख्य आधार बन चुका है। विद्यालय स्तर पर ही विद्यार्थियों में प्रकृति-प्रेम, वृक्षारोपण और स्वच्छता जैसे संस्कारों का बीजारोपण करना एक दूरदर्शी कदम है। 'प्रकृति प्रहरी' इस उद्देश्य को बखूबी पूरा कर रही है।

पत्रिका का पहला अंक अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी रहा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह दूसरा अंक भी नए विचारों, उत्कृष्ट अनुभवों और विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से गंभीर पर्यावरण संबंधी चुनौतियों से हमारे समाज को पर्यावरण-संरक्षण के प्रति और अधिक जागरूक बनाएगा।

श्री सुजीत कुमार दास
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
सीतामढ़ी

समाजसेवी शंकर नाथ झा की कलम से

प्रकृति प्रहरी" पत्रिका के गौरवपूर्ण प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ! आज के समय में पर्यावरण संरक्षण, वैज्ञानिक सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास अत्यंत आवश्यक है। यह पत्रिका विद्यार्थियों के भीतर प्रकृति प्रेम, जैव विविधता, स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं रचनात्मकता को विकसित करने का एक सशक्त माध्यम बनेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह मंच पाठकों को जागरूक कर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य करेगा। शिक्षकों एवं संपादकीय टीम का यह नवाचारी प्रयास अत्यंत सराहनीय है। आपके इस उत्तम कार्य हेतु मेरी शुभकामनाएँ सदैव आपके साथ हैं।

डॉ. शंकर नाथ झा
प्रख्यात शिशु रोग विशेषज्ञ
एवं समाजसेवी, जमुई

समीक्षा कॉर्नर

एक प्रति, अनगिनत उम्मीदें!

DEO BANKA

RDDE BHAGALPUR

DEO JAMUI

DPO(Estb.) BANKA

DEO & DPO MUZAFFARPUR

DPO JAMUI

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ क्र०
1	एक बूंद की यात्रा	1-2
2	भू-जल: फल्गु की कहानी, गया जी की जुबानी	3-4
3	E-waste : नए युग का कचरा	5-6
4	इको फ्रेंडली विद्यालय	7-8
5	पर्यावरण नायक	9-10
6	पोषण वाटिका से पोषण	11 12
7	डिजिटल उपवास	13-14
8	विलुप्तप्राय पौधे एवं पक्षी	15-17
9	जिला विशेष: पटना, बाँका, मधेपुरा बक्सर	18-25
10	नन्हें प्रकृति प्रहरी	26-27
11	काव्य से पर्यावरण जागरूकता	28-29
12	बिहार सरकार की योजना	30-31
13	महत्वपूर्ण दिवस	32
14	क्विज	33

एक बूंद की यात्रा

लेख - उर्मिला कुमारी
उ. मा. वि, चैता दक्षिण
उजियारपुर, समस्तीपुर

डॉ. राजीव रंजन सिंह (शिक्षक, मध्य विद्यालय चिन्तावन बिगहा, कुटुंबा, औरंगाबाद) का मानना है कि विज्ञान की सबसे बड़ी प्रयोगशाला हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी है। बचपन में अपने गाँव के पुराने कुएँ और दादी के इस कथन — **"कुआँ गाँव की प्यास बुझाता है, इसका पानी अनमोल है"** — के बावजूद वे और अन्य बच्चे खेल-खेल में पानी बर्बाद कर दिया करते थे। उन्हें लगता था कि पानी कभी खत्म नहीं होगा और पानी खरीदकर पीने का दौर देखना पड़ेगा, ऐसा उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था।

हालाँकि, एक समय गाँव के सभी कुएँ सूख गए और हैंडपंप हवा फेंकने लगे। पानी के लिए महिलाओं को मीलों दूर भटकना पड़ता था। इस भीषण संकट को देखकर उन्हें अपनी दादी की बात गहराई से समझ आई कि **"पानी गया तो जीवन गया।"** उसी दिन उन्होंने संकल्प लिया कि वे विज्ञान को केवल किताबों तक सीमित न रखकर ज़मीन पर उतारेंगे।

वर्ष 2022 में जब डॉ. सिंह ने मध्य विद्यालय चिन्तावन बिगहा में कार्यभार संभाला, तो उन्होंने देखा कि छात्र 'मिड-डे मील' के बाद नल खुला छोड़ देते थे और पानी मैदान में बह जाता था। बच्चों को वही गलती दोहराने से रोकने के लिए उन्होंने **प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग (PBL)** को अपना जरिया बनाया।

उन्होंने बच्चों से एक गंभीर सवाल पूछा — "अगर कल से स्कूल में पानी आना बंद हो जाए तो क्या होगा?" इसके बाद उन्होंने विद्यार्थियों के सहयोग से '**जल प्रहरी क्लब**' का गठन किया। हरी टी-शर्ट और सफेद टोपी में सजने वाले ये **'जल प्रहरी'** स्कूल के असली नायक बने, जिन्होंने न केवल विद्यालय में पानी की बर्बादी रोकी, बल्कि पूरे गाँव में जागरूकता फैलाना शुरू किया।

जल प्रहरी टीम के प्रमुख 4 प्रयोग:

बूँद-बूँद बचत	विद्यालय के सभी नलों में टोंटी (Faucets) लगवाकर पानी टपकना पूरी तरह बंद किया गया।
रेन वाटर हार्वेस्टिंग	छत के बारिश के पानी को पाइप के जरिए सोख्ता गड्ढे (Soak pit) तक पहुँचाया गया।
मग-बाल्टी अभियान	हाथ धोने और भोजन की प्लेट साफ करने के लिए सीधे नल की जगह मग और बाल्टी का अनिवार्य उपयोग लागू किया गया।
जल ऑडिट	शनिवार को (बैगलेस डे) के दिन छात्र स्वयं मापते हैं कि विद्यालय में कितना पानी आया और कितना बचाया गया।

शुरुआत में बच्चों ने इस पहल पर संशय जताया, लेकिन जब भीषण गर्मी (जून महीने) में भी स्कूल का चापाकल नहीं सूखा, तो सभी को इसकी अहमियत समझ आ गई। आज स्थिति यह है कि बच्चे अपने घरों में माता-पिता को ब्रश करते समय नल बंद करने के लिए जागरूक करते हैं। गाँव वाले रेन वाटर हार्वेस्टिंग की विधि सीखने विद्यालय आने लगे हैं। इस अभियान में जिला तकनीकी समूह और पंचायत जल समिति का भी महत्वपूर्ण सहयोग मिला।

विद्यालय की एक बच्ची का कहना है: **"पानी सिर्फ नदी में ही नहीं है, वह तुम्हारी उंगली में है जो नल को बंद करती है। वह तुम्हारी बोतल में है, जो बर्बाद होती एक-एक बूँद बचाती है।"**

डॉ. राजीव रंजन सिंह के लिए अध्यापन केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि हर बच्चे के मन में जल संरक्षण की चिनगारी जगाने का मिशन है। वे मानते हैं कि जब बच्चा कहता है, "सर, आज हमने नल ठीक करवा दिया" या "2 बाल्टी पानी बचाया", तो वही उनकी सबसे बड़ी जीत होती है।

भू-जलः फल्गु की कहानी, गया जी की जुबानी

लेख - प्रमोद कुमार
सरस्वती विद्या निकेतन (माडल स्कूल), +2 जिला स्कूल गया जी

गया जी में गहराता भूजल संकट: ऐतिहासिक धरोहर से वर्तमान की विभीषिका तक

भीषण गर्मी के मौसम में सुबह-सुबह एक परिचित का घबराया हुआ फोन आया—"सर, हमारे यहाँ बोरिंग फेल हो गया है, एक बूंद भी पानी नहीं है। क्या हम आपके घर आ सकते हैं?" इस घटना ने जल संकट की उस कड़वी सच्चाई का अहसास कराया जो आज गया शहर के लगभग हर इलाके की साझा समस्या बन चुकी है। पानी की असली कीमत तभी समझ आती है जब इंसान बूंद-बूंद के लिए मोहताज होने लगता है।

पौराणिक संदर्भ और वर्तमान स्थिति

जिस गया जी को मोक्षधाम, ज्ञान की भूमि और अंतःसलिला फल्गु नदी की पावन धारा के रूप में जाना जाता है, आज वही विश्व प्रसिद्ध विष्णु नगरी मानवीय लापरवाही के कारण गंभीर जल संकट के मुहाने पर खड़ी है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सीता माता के श्रापवश फल्गु नदी की ऊपरी सतह भले ही सूखी दिखती हो, लेकिन बालू के नीचे हमेशा जीवनदायिनी धारा बहती रहती थी। दुर्भाग्य से, आज की वास्तविकता कुछ और ही बयां करती है।

वर्तमान में फल्गु नदी शहर के गंदे नालों के बहाव से प्रदूषण का दंश झेल रही है और महज एक बरसाती नदी बनकर रह गई है। अत्यधिक जल दोहन और मानवीय उपेक्षा के कारण अब गर्मी के मौसम में 3-4 फीट गड्ढा खोदने पर भी पानी मिलना मुश्किल हो गया है, वहीं सैकड़ों फीट की बोरिंग के बाद भी पर्याप्त पानी नसीब नहीं हो रहा।

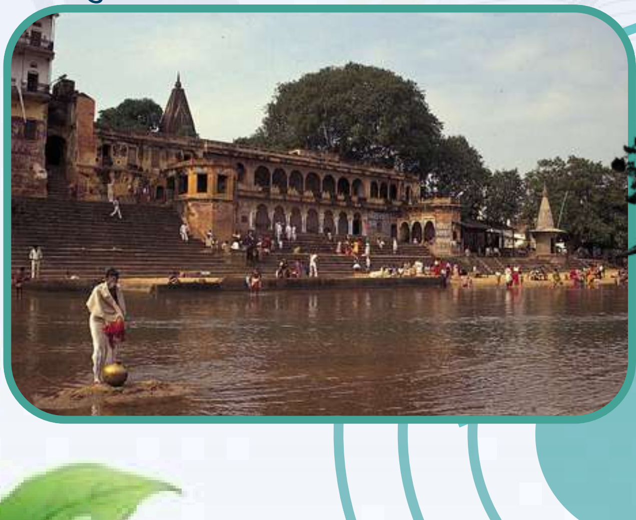

जल संकट के मुख्य कारण

शहर में गहराते इस संकट के पीछे कई प्राकृतिक और मानव निर्मित कारण ज़िम्मेदार हैं:

- औसतन से काफी कम वर्षा होना
- तीव्र गति से बढ़ती आबादी और कंक्रीट का अनियंत्रित विस्तार
- पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और जंगलों का विनाश
- जल स्रोतों (तालाबों और पोखरों) पर अतिक्रमण व संधारण में कमी
- सतहों का पक्कीकरण और भूजल का आवश्यकता से अधिक व अनियंत्रित दोहन
- राहत के कदम और समाधान की आवश्यकता

इस विकराल समस्या से निजात दिलाने के लिए बिहार सरकार द्वारा फल्गु नदी में निर्मित रबर डैम और गया शहर तक गंगाजल लाने की योजना एक अत्यंत सराहनीय पहल है। इसके साथ ही जिला प्रशासन एवं गया नगर निगम भी समस्या के स्थायी समाधान के लिए प्रयासरत हैं।

हालाँकि, केवल सरकारी प्रयास ही काफी नहीं हैं। यदि हम अभी से वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting), व्यापक वृक्षारोपण, पुराने जल स्रोतों का संरक्षण और पानी का विवेकपूर्ण उपयोग शुरू नहीं करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थिति भयावह हो जाएगी। जल केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है; इसकी हर एक बूंद बचाना हमारा नैतिक कर्तव्य और नागरिक दायित्व दोनों है

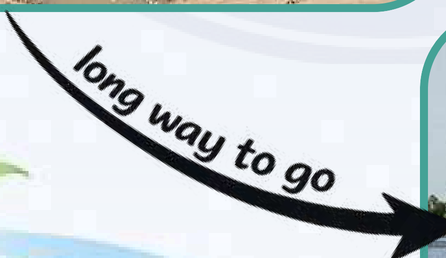

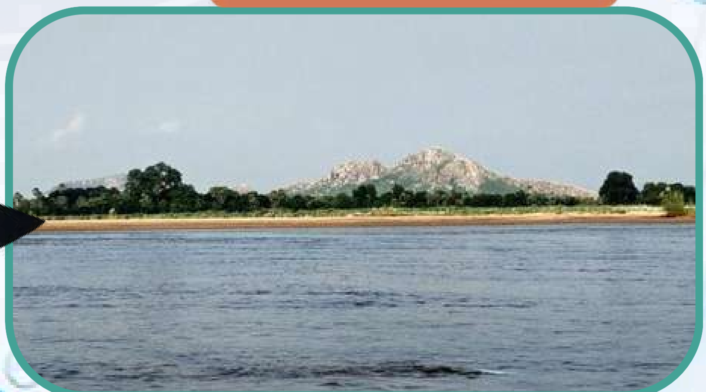

e-Waste: नए युग का कचरा

लेख - कुमार अभिषेक
उ. म. वि. सलेमपुर द्वाब
मुज़फ्फरपुर

तकनीक ने हमारे जीवन को जितना सरल बनाया है, उतनी ही तेजी से उसने एक नई समस्या को भी जन्म दिया है| तकनीक के इस तेज़ी से बदलते दौर में जहाँ हर दिन नए-नए इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बाज़ार में आ रहे हैं, वहीं एक नई चुनौती भी तेजी से सामने आ रही है- **ई-वेस्ट (E-Waste)**। यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक गंभीर पर्यावरणीय और सामाजिक समस्या बन चुका है।

ताज़ा रिपोर्टों के अनुसार, भारत लगभग **4 मिलियन मेट्रिक टन ई-वेस्ट** उत्पन्न करने के साथ-साथ दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ई-वेस्ट उत्पादक देश है। चीन और अमेरिका के बाद भारत का स्थान आता है। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या यह भारत की तकनीकी प्रगति का संकेत है, या फिर हम धीरे-धीरे इलेक्ट्रॉनिक कचरे के बोझ तले दबते जा रहे हैं?

ई-वेस्ट क्या है?

ई-वेस्ट उन सभी इलेक्ट्रॉनिक एवं विद्युत उपकरणों को कहा जाता है जो खराब हो चुके हों, अनुपयोगी हो गए हों या नई तकनीक आने के कारण उपयोग से बाहर करदिए गए हों। जैसे- मोबाइल फोन, कंप्यूटर, लैपटॉप, टीवी, फ्रिज, प्रिंटर, बैटरी आदि।

ई-वेस्ट: अवसर भी, चुनौती भी

पहली नज़र में "**कचरा**" और "**लाभ**" एक साथ सुनना अजीब लग सकता है, लेकिन ई-वेस्ट में सोना, चाँदी, ताँबा और एल्युमिनियम जैसी मूल्यवान धातुएँ होती हैं, जिन्हें **पुनर्चक्रण (Recycling)** के माध्यम से दोबारा उपयोग में लाया जा सकता है। लेकिन इसका दूसरा पक्ष कहीं अधिक चिंताजनक है। ई-वेस्ट में सीसा, पारा, कैडमियम और क्रोमियम जैसे विषैले तत्व पाए जाते हैं। यदि इनका वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण नहीं किया जाए, तो ये मिट्टी, जल और वायु को प्रदूषित कर मानव स्वास्थ्य पर गंभीर दुष्प्रभाव डालते हैं। अनौपचारिक तरीके से ई-वेस्ट जलाने या तोड़ने वाले श्रमिक भी इन जहरीले तत्वों के सीधे संपर्क में आते हैं।

E-WASTE
ZERO WASTE

डेटा सुरक्षा भी एक बड़ी चिंता, आज हमारे मोबाइल और लैपटॉप केवल उपकरण नहीं, बल्कि हमारी निजी जानकारी का भंडार हैं। यदि इन्हें बिना डेटा मिटाए बेच दिया जाए या फेंक दिया जाए, तो बैंकिंग जानकारी, व्यक्तिगत फोटो, दस्तावेज़ और अन्य संवेदनशील सूचनाओं का दुरुपयोग हो सकता है। इससे साइबर अपराध, पहचान की चोरी और ब्लैकमेलिंग जैसी घटनाओं का खतरा बढ़ जाता है।

ई-वेस्ट को लेकर सरकार की पहल

भारत सरकार ने 1 अप्रैल 2023 से ई-वेस्ट (प्रबंधन) नियम, 2022 लागू किए हैं। इन नियमों के तहत Extended Producer Responsibility (EPR) व्यवस्था लागू की गई है, जिसके अनुसार इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद बनाने वाली कंपनियों की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने उत्पादों से उत्पन्न ई-वेस्ट के संग्रहण और पुनर्चक्रण की व्यवस्था सुनिश्चित करें। वर्ष 2024–25 में भारत के अनुमानित ई-वेस्ट का लगभग 70.7% औपचारिक प्रणाली के माध्यम से एकत्रित, पुनर्चक्रित या सुरक्षित रूप से निस्तारित किया गया, जो एक सकारात्मक संकेत है।

हमारी जिम्मेदारी

- अनुपयोगी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का निस्तारण केवल अधिकृत ई-वेस्ट संग्रह केंद्रों या रीसाइक्लिंग एजेंसियों के माध्यम से करें।
- मोबाइल, लैपटॉप या कंप्यूटर देने से पहले उनका पूरा डेटा सुरक्षित रूप से मिटा दें।
- केवल फैशन या नए मॉडल के आकर्षण में बार-बार इलेक्ट्रॉनिक उपकरण न बदलें।
- जहाँ तक संभव हो, **Repair, Reuse और Recycle** की संस्कृति को अपनाएँ।
- अपने परिवार और समाज में ई-वेस्ट के प्रति जागरूकता फैलाएँ।

निष्कर्ष

ई-वेस्ट केवल कचरा नहीं, बल्कि एक ऐसी चुनौती है जिसे सही नीति, वैज्ञानिक प्रबंधन और जन-जागरूकता के माध्यम से अवसर में बदला जा सकता है। यदि हम आज जिम्मेदारी से इलेक्ट्रॉनिक कचरे का प्रबंधन करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, सुरक्षित और टिकाऊ पर्यावरण सुनिश्चित कर सकेंगे।

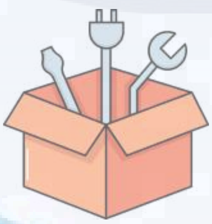

इको फ्रेंडली विद्यालय

लेख - प्रिया कुमारी
उ० मध्य विद्यालय औराही,
गम्हरिया, मधेपुरा

राजकीय मध्य विद्यालय तेतररिया

हर विद्यालय की अपनी एक कहानी होती है। हम बात कर रहे हैं वर्ष 1918 में स्थापित **राजकीय मध्य विद्यालय तेतररिया, पूर्वी चंपारण** की। एक समय था जब यह विद्यालय इस क्षेत्र का उगता हुआ सूरज माना जाता था, परंतु समय के साथ यह सूरज धीरे-धीरे अस्त होने लगा। लेकिन कहा भी गया है—

"अस्त का अर्थ अंत नहीं, बल्कि नए उदय की तैयारी है।"

समय बीतता गया और विद्यालय पर निराशा का अंधेरा छाया रहा। फिर वर्ष 2003 में ऊर्जा बनकर आए शिक्षक महेश कुमार। विद्यालय की स्थिति देखकर उन्होंने इसकी खोई हुई पहचान लौटाने का संकल्प लिया। यह प्रयास वर्ष 2023 में और भी सशक्त हुआ, जब इस यात्रा में उनके साथी बने शिक्षक अब्दुल कलाम। दोनों ने मिलकर विद्यालय को केवल पढ़ाई तक सीमित न रखकर संस्कार, नवाचार, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का केंद्र बनाने का दृढ़ निश्चय किया।

धीरे-धीरे अंधेरा छंटने लगा और नई सुबह की किरणें दिखाई देने लगीं। विद्यालय की दीवारें बच्चों की सीखने की साथी बन गईं और विद्यालय पूरे पूर्वी चंपारण का पहला **"शिक्षा एक्सप्रेस"** बनकर उभरा। दोनों शिक्षकों ने अनेक अभिनव और सराहनीय पहलें शुरू कीं, जिनमें **"एक जन्मदिन – एक फलदार पौधा"** अभियान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रत्येक बच्चे को उसके जन्मदिन पर एक फलदार पौधा भेंट किया जाता है, जिसे वह अपने परिवार के साथ लगाकर उसकी देखभाल भी करता है। विवाह एवं अन्य सामाजिक समारोहों में भी इस परंपरा को आगे बढ़ाने का संदेश समाज को प्रेरित करता है।

महेश कुमार जी एवं अब्दुल कलाम जी के सतत प्रयासों ने विद्यालय को केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता ही नहीं, बल्कि हरित परिसर की पहचान भी दिलाई। आज विद्यालय ऐसा प्रतीत होता है मानो उसने हरियाली की एक सुंदर चादर ओढ़ रखी हो। परिसर का प्रत्येक कोना वृक्षों, फलदार पौधों, पुष्पों और प्राकृतिक सौंदर्य से सुसज्जित है। विद्यालय में गठित यूथ एवं ईको क्लब ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्लब के माध्यम से नियमित वृक्षारोपण, पौधों का संरक्षण, स्वच्छता अभियान तथा पर्यावरण जागरूकता के विविध कार्यक्रम संचालित किए गए, जिनके परिणामस्वरूप विद्यालय परिसर आज स्वच्छ, सुंदर, हरित और प्रेरणादायक वातावरण का जीवंत उदाहरण बन चुका है।

विद्यालय के शताब्दी वर्ष के अवसर पर समाज, पूर्व छात्र, पूर्व शिक्षक तथा अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं का ऐतिहासिक समागम हुआ। इस अवसर पर विद्यालय की आवश्यकताओं पर गंभीर विमर्श किया गया तथा नए कक्षों के निर्माण की स्वीकृति भी प्राप्त हुई। यह विद्यालय और समाज के मजबूत संबंधों का प्रेरणादायी उदाहरण है।

आज राजकीय मध्य विद्यालय तेतररिया इस बात का जीवंत प्रमाण है कि जब एक शिक्षक का समर्पण, समाज का सहयोग और सकारात्मक सोच एक साथ मिलते हैं, तो अंधेरा कितना भी गहरा क्यों न हो, नई सुबह को आने से कोई नहीं रोक सकता। आदरणीय महेश कुमार जी एवं अब्दुल कलाम जी की यह प्रेरणादायी यात्रा शिक्षा को प्रकृति, संस्कार, नवाचार और सामाजिक जिम्मेदारियों से जोड़ने का सफल संदेश देती है। उनके सकारात्मक, जीवंत और अनुकरणीय प्रयासों को प्रकृति प्रहरी परिवार का सादर प्रणाम।

ECO-FRIENDLY

पर्यावरण नायक

लेख - डॉ स्वराक्षी स्वरा
मध्य विद्यालय हाजीपुर,
आवासबोर्ड खगड़िया

नीम योद्धा: विपिन कुमार जी

"न कस्ती का शौक है, न बस्ती का शौक है मुझे
मैं बहता हूँ केवल,बह जाने का शौक है मुझे"

ये पंक्तियां हैं बक्सर के **विपिन कुमार जी** की,जिन्हें आज पूरा बिहार **'पर्यावरण वीर'** के नाम से जानता है। 12 जनवरी 1977 को बक्सर जिले के धनसोई गांव में जन्मे विपिन जी लोक कलाकार, पत्रकार और शिक्षक हैं; पर उनकी असली पहचान है - **"पर्यावरण का प्रहरी"।**

पिछले 11 सालों से वे एक ही मिशन पर लगे हैं - **"हर जन्मदिन, शादी, व्रत पर पौधा लगाओ"**। उनका मानना है कि अगर हर इंसान जन्मदिन पर एक पौधा लगाए तो धरती बच जाएगी।उनके इन्हीं लगन और जुनून की वजह से वो बक्सर के **नीम योद्धा** के नाम से प्रसिद्ध हुए। विपिन जी ने पर्यावरण के लिए कई अनोखे काम किए हैं-

- **जन-जागरूकता अभियान :** गांव-गांव जाकर लोगों से अपील करते हैं कि सामाजिक और धार्मिक संस्कारों में पौधा रोपण को शामिल करें
- **30 KM पदयात्रा:** बक्सर के धनसोई से जिला मुख्यालय तक **"पर्यावरण बचाओ"** पदयात्रा। रास्ते में किसानों से **'नीम संवाद'** कर नीम के फायदे बताए। स्वागत भी फूलों की माला से नहीं, **नीम के पत्तों की माला** से करवाया।

- **पीपल-नीम-तुलसी अभियान:** लाखों पौधों का वितरण और रोपण।
- **कला के माध्यम से:** नाटक, मंच और लेखन के जरिए पर्यावरण का संदेश। 2008 से 2021 तक स्कूल का सफल संचालन भी किया।

उनके कार्यों के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिले यथा...

- **World Pipal Warrior Award 2021,नेपाल**
- **पर्यावरण योद्धा सम्मान 2017**
- **पीपल नीम तुलसी अभियान पटना**
- **कलाम यूथ लीडरशिप अवार्ड 2022**
- **ख्वाब फाउंडेशन पटना, मंदार रत्न सम्मान 2019,**
- **राष्ट्रीय पर्यावरण मंच बिहार**
- **आशा पर्यावरण सुरक्षा सम्मान 2018** आदि अनेकों सम्मान इनके नाम हो चुके हैं।

बक्सर के विपिन कुमार जी सिर्फ शिक्षक नहीं, पर्यावरण के सच्चे नायक हैं। उन्होंने हमें सिखाया कि बड़े बदलाव के लिए बड़े पद की जरूरत नहीं, एक जिद और एक पौधे की जरूरत होती है। आइए हम सब भी उनसे प्रेरणा लेकर ये प्रण लेते हैं कि "**हम भी अब से हर उत्सव को पर्यावरण उत्सव के रूप में मनाएंगे**"

क्योंकि-

***प्रकृति ही हमारा परिवार है। इसे उतना ही जिंदा रखना है, जितना कि खुद जिंदा रहना है"।**

पोषण वाटिका से पोषण

लेख - शोभा तिवारी
मध्य विद्यालय घिरसिंडी
नबीनगर, औरंगाबाद

पोषण वाटिका एक ऐसी छोटी सी बगिया है जहाँ पौष्टिक फल, सब्जियाँ और औषधीय पौधे उगाए जाते हैं, ताकि सभी को ताज़ा, सुरक्षित और पौष्टिक आहार मिल सके।

शुरुआती चुनौतियाँ और कार्ययोजना

जब जुलाई 2025 में प्रा० वि० रामनगर में नई प्रधान शिक्षिका का पदस्थापन हुआ, तो उन्होंने विद्यालय में '**पोषण वाटिका**' बनाने की एक अनूठी पहल शुरू की। उनके लिए पोषण वाटिका केवल सब्जियाँ उगाने की जगह नहीं, बल्कि बच्चों के सीखने, प्रकृति से जुड़ने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का एक सुंदर माध्यम थी। शुरुआत में विद्यालय परिसर की स्थिति सहज नहीं थी—पूरा परिसर घनी घास और झाड़ियों से घिरा हुआ था। भूमि तैयार करना, पानी की व्यवस्था करना और पौधों की सुरक्षा जैसी कई चुनौतियाँ सामने थीं। इन कठिनाइयों से निपटने के लिए प्रधान शिक्षिका ने एक सुव्यवस्थित कार्ययोजना तैयार की।

शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और विद्यालय शिक्षा समिति (SMC) के सामूहिक सहयोग से सभी बाधाओं को दूर किया गया। विद्यालय के बच्चों ने भी पूरे उत्साह के साथ पौधे लगाए और उनकी देखभाल की जिम्मेदारी उठाई।

मेहनत का रंग: एक लहलहाती बगिया

सामूहिक प्रयासों और नियमित देखभाल का परिणाम यह हुआ कि आज विद्यालय की पोषण वाटिका में:

सब्जियाँ: भिंडी, बैंगन, लौकी, कद्दू, गाजर, बीट, साग, टमाटर, मिर्च और धनिया

फल: पपीता और अमरूद

जैविक खाद और नियमित सिंचाई के माध्यम से उगाई गई इन ताज़ी और पौष्टिक सब्जियों का स्वाद अब बच्चों को चखने को मिलता है।

बच्चों के जीवन और व्यवहार में बदलाव

पोषण वाटिका ने न केवल विद्यालय परिसर को हरा-भरा और आकर्षक बनाया है, बल्कि बच्चों के भीतर कई सकारात्मक आदतें भी विकसित की हैं:

- पौधों के प्रति प्रेम और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता।
- अन्न का सम्मान और स्वच्छता की आदतें।
- बच्चे व्यावहारिक रूप से यह सीख रहे हैं कि **"स्वस्थ भोजन ही अच्छे स्वास्थ्य की सबसे मजबूत नींव है।"**

प्रारम्भिक कठिनाइयों के बावजूद, शिक्षक, बच्चे, अभिभावक और शिक्षा समिति के संयुक्त प्रयास से आज यह पोषण वाटिका विद्यालय की एक बड़ी उपलब्धि बन चुकी है। यदि हर विद्यालय और हर घर में इसी तरह एक छोटी सी पोषण वाटिका विकसित की जाए, तो कुपोषण को कम करने, पर्यावरण को बचाने और आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ व जागरूक नागरिक बनाने में एक बड़ी सफलता मिल सकती है।

पूजा कुमारी
प्राथमिक विद्यालय रामनगर, सेमली
कटिहार।

डिजिटल उपवास

लेख - गौरव कुमार
राजकीय मध्य विद्यालय प्रेमजीवर,
बहादुरपुर, दरभंगा

आज का युग तकनीक का युग है जहाँ स्मार्टफोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया हमारे दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग बन चुके हैं। सुबह के अलार्म से लेकर रात की स्क्रॉलिंग तक—बाज़ार, बैंक, दफ़्तर और स्कूल जैसी सभी आधुनिक सेवाएँ आज डिजिटल तकनीक पर निर्भर हैं। भारत सरकार की '**डिजिटल इंडिया**' पहल 2047 तक विकसित भारत के संकल्प को सशक्त बना रही है। हालांकि, इस सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि तकनीक का अत्यधिक और बेलगाम उपयोग मानसिक तनाव, एकाग्रता में कमी, सामाजिक दूरी, गैजेट एडिक्शन और पर्यावरण क्षति जैसी गंभीर समस्याएँ पैदा कर रहा है। इस परिस्थिति में "**डिजिटल उपवास" (Digital Fasting)** का विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

डिजिटल उपवास क्या है और यह क्यों आवश्यक है?

डिजिटल उपवास का अर्थ है—**एक निश्चित समय (जैसे 24 घंटे) के लिए मोबाइल, इंटरनेट और अन्य डिजिटल उपकरणों से पूरी तरह दूरी बनाना।** जिस प्रकार शारीरिक शुद्धि के लिए अन्न का उपवास रखा जाता है, उसी प्रकार मानसिक शुद्धि के लिए डिजिटल उपवास अनिवार्य है

मानसिक व शारीरिक कल्याण: लगातार स्क्रीन देखने से आँखें थक जाती हैं और ध्यान भटकता है। उपवास का यह अभ्यास मन को शांत करता है और एकाग्रता बढ़ाता है। विशेष रूप से विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए यह एक रामबाण उपाय है।

प्रकृति और समाज से जुड़ाव: स्क्रीन स्क्रॉलिंग छोड़कर इस समय का उपयोग पेड़-पौधे लगाने, उनकी देखभाल करने, घरेलू कचरा प्रबंधन करने और परिजनों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने में किया जा सकता है।

पर्यावरण पर प्रभाव और सतत विकास

डिजिटलीकरण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हमारी प्रकृति को भी प्रभावित करता है:

ऊर्जा और जल की खपत: इंटरनेट संचालित करने वाले विशाल डाटा सेंटरों को चलाने के लिए भारी मात्रा में बिजली और पानी की आवश्यकता होती है।

ई-कचरा (E-Waste): हम हर साल हजारों टन ई-कचरा पैदा करते हैं, जिसका केवल 20% ही रीसायकल हो पाता है।

प्राकृतिक दोहन: गैजेट्स के निर्माण के लिए संवेदनशील प्राकृतिक क्षेत्रों में खनन किया जाता है।

निष्कर्ष

डिजिटल इंडिया मिशन का उद्देश्य केवल तकनीक का प्रसार करना नहीं, बल्कि इसका संतुलित और सतत उपयोग सुनिश्चित करना भी होना चाहिए। एक दिन का डिजिटल उपवास हमें यह महसूस कराता है कि हम तकनीक पर कितने निर्भर हो चुके हैं। समय-समय पर डिजिटल उपवास अपनाकर हम अपनी ऊर्जा बचत के साथ कार्बन फुटप्रिंट्स को कम कर सकते हैं, जिससे हमारा मन, तन और पर्यावरण तीनों समृद्ध होते हैं।

विलुप्तप्राय पौधे

लेख - शोभा सिंह
कृत्यानंद मध्य विद्यालय
मलयपुर जमुई

खस- एक महत्वपूर्ण किंतु संकटग्रस्त देशी घास

खस घास कुल का एक बहुवर्षीय पौधा है। यह भारत की देशी घास प्रजातियों में से एक है और बिहार में इसे **संकटग्रस्त** पौधों की सूची में शामिल किया गया है।

इसका प्राकृतिक आवास लगातार कम होने के कारण इसको संरक्षित पौधों में शामिल किया गया है। भारत सरकार ने जैव विविधता अधिनियम, 2002 के अंतर्गत बिहार की कुछ संकटग्रस्त पौध प्रजातियों में इसे अधिसूचित किया है। यह घास केवल एक साधारण वनस्पति नहीं, बल्कि प्राकृतिक घासभूमियों की जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके पौधे की जड़ें गहरी और मजबूत होती हैं, जिससे यह मिट्टी को मजबूती से बाँधकर मृदा अपरदन को रोकने में सहायता करती है।

पहले बिहार के कई प्राकृतिक क्षेत्रों में इसकी उपस्थिति अधिक थी, लेकिन समय के साथ जंगलों और घासभूमियों के सिकुड़ने, कृषि विस्तार, शहरीकरण तथा अत्यधिक चराई के कारण इसकी संख्या में लगातार कमी आई है। खस की जड़ें वर्षा के समय मिट्टी के बहाव को रोकती हैं, जिससे उपजाऊ मिट्टी सुरक्षित रहती है। खस से मूल्यवान तेल प्राप्त होता हैं। यह वर्षा जल को भूमि में समाने में भी सहायता करती है और घासभूमि पारिस्थितिकी तंत्र में अनेक छोटे जीवों, कीटों और पक्षियों को आश्रय प्रदान करती है।

बिहार में इस प्रजाति के संकटग्रस्त होने के प्रमुख कारण हैं—
प्राकृतिक घासभूमियों का नष्ट होना, अवैज्ञानिक भूमि उपयोग, सड़क एवं भवन निर्माण, अत्यधिक चराई, तथा जलवायु परिवर्तन। यदि इन कारणों पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो भविष्य में यह प्रजाति स्थानीय स्तर पर विलुप्त हो सकती है।

इस पौधे के संरक्षण के लिए कई उपाय आवश्यक हैं। सबसे पहले इसके प्राकृतिक आवासों की पहचान कर उन्हें संरक्षित किया जाना चाहिए। विद्यालयों, और स्थानीय समुदायों को देशी घासों के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए। वन विभाग, जैव विविधता प्रबंधन समितियाँ तथा पंचायतें मिलकर ऐसे क्षेत्रों का संरक्षण कर सकती हैं जहाँ यह प्रजाति स्वाभाविक रूप से पाई जाती है।

विद्यालय स्तर पर बच्चों को इसके प्रति जागरूक करना एवं इसके महत्व को बताना भी इसके संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। छात्र स्थानीय क्षेत्र में देशी घासों का सर्वेक्षण करके उसकी पहचान सीखें, तथा विद्यालय में **"देशी घास संरक्षण उद्यान"** विकसित करें। इससे विद्यार्थियों में जैव विविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और स्थानीय वनस्पतियों के संरक्षण में समुदाय की भागीदारी भी सुनिश्चित होगी। खस केवल एक घास नहीं, बल्कि बिहार की प्राकृतिक धरोहरों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका संरक्षण यदि सरकार, वैज्ञानिक, शिक्षक, विद्यार्थी और स्थानीय समुदाय मिलकर करें, तो इस संकटग्रस्त प्रजाति को सुरक्षित रखा जा सकता है और बिहार की प्राकृतिक घासभूमियों को पुनर्जीवित करके यहाँ की जैव विविधता को समृद्ध किया जा सकता है।

विलुप्तप्राय पक्षी

लेख - अमृता कुमारी
उच्च मा॰ विद्यालय बसंतपुर
सुपौल

हरगिला पक्षी: एक प्रकृति प्रहरी

आइये जानते हैं कैसे एक अशुभ माने जाने वाले पक्षी को उस क्षेत्र की शान माना जाने लगा है। हम बात कर रहे है **हरगिला पक्षी** की जो वैश्विक स्तर का लगभग 80% असम में पाया जाता है। हाल ही में प्रधानमंत्री जी ने अपने **"मन की बात"** में पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका को बतलाया था। हरगिला **(Greater Adjutant Stork)** पक्षी सारस प्रजाति का एक पक्षी है जिसे प्रकृति संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) की रेड लिस्ट में **संकट के निकट (Near Threatened)** की सूची में रखा गया है।

हरगिला की भूमिका

हरगिला एक मांसाहारी और मृतभक्षि पक्षी है। यह सड़े-गले मांस, मरे हुए जीवों और कचरे को खाकर प्राकृतिक सफाईकर्मी की भूमिका निभाता है। साथ ही, यह वेटलैंड और जलाशयों के आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र को स्वच्छ और संतुलित बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

अशुभ से शान तक का सफर

इस पक्षी को लोग पहले अशुभ मानते थे कारण यह था कि ये मृत जानवरों के सड़ गले मांस को खाता है। कोई इसे अपने घर के आस पास भटकने नहीं देते थें यहां तक कि इसका घोंसला जिस पेड़ पर होता था उसे काट देते थें। किंतु धीरे धीरे लोगों में जागरूकता लाई गई कि यह पक्षी हमारे पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में बहुत उपयोगी है। अब लोग इसे अपने क्षेत्र की शान समझते हैं।

हरगिला हमें यह सिखाता है कि प्रकृति का प्रत्येक जीव किसी न किसी रूप में उपयोगी है। इसे बचाना, अपने पर्यावरण को बचाना है।

जिला विशेष: पटना

लेख - श्रीमती अपराजिता कुमारी
मध्य विद्यालय पाली गंज, पटना

प्रकृति के आँगन में शिक्षा का उपवन

आज 30 जून जब मुझे **नीतू मैम** के **प्राथमिक विद्यालय प्रखंड कॉलोनी फुलवारी शरीफ** में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । आज का दिन मेरे जीवन के पन्नों में एक सुनहरे अध्याय की तरह दर्ज हो गया। लंबे समय से संजोया हुआ मेरा एक सपना आज हकीकत बन गया, जब मुझे आदरणीय नीतू शाही मैम के विद्यालय प्रांगण में कदम रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जून महीने का यह अंतिम दिन मेरे लिए हमेशा-हमेशा के लिए यादगार बन गया।

स्वागत करती हरियाली और प्रकृति का संगीत

विद्यालय के मुख्य द्वार से भीतर प्रवेश करते ही ऐसा लगा मानो हम कंक्रीट की दुनिया से निकलकर किसी तपोवन में आ गए हों। प्रांगण में खड़े विशालकाय वृक्ष ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो अपनी बाहें फैलाकर आगंतुकों का अभिनंदन कर रहे हों।

चारों तरफ फैली मखमली हरियाली, और फलों-फूलों से लदे वृक्ष—आम, अमरूद, जामुन, चीकू, कटहल और महकते हुए कचनार व मालती और न जाने कितने ही रंग-बिरंगे फूलों के पौधे... हवा के झोंकों के साथ झूम-झूम कर हर आने वाले का स्वागत कर रहे थे। पर्यावरण के प्रति ऐसा समर्पण अद्भुत है। सामने बरामदे में ही मां सरस्वती की तस्वीर जैसे सभी आने जाने वाले को आशीर्वाद दे रही हों।

नन्हें हाथों का जादू और कलात्मक वर्ग कक्ष

विद्यालय परिसर सिर्फ स्वच्छ और सुंदर ही नहीं, बल्कि जीवंत था। हर एक वर्ग कक्ष बच्चों की मासूम कलात्मकता की गवाही दे रहा था। चारों तरफ बिखरे कला एवं रचनात्मकता के रंग, बच्चों के नन्हें हाथों से बने सुंदर और रचनात्मक क्राफ्ट्स, दीवारों पर लगायी गई कलाकृतियाँ... यह सब मिलकर विद्यालय की शोभा में चार चांद लगा रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो हर कोना बच्चों की मुस्कान और उनकी रचनात्मकता की कोई अनकही कहानी सुना रहा हो। मैं मंत्रमुग्ध सी, अपलक दृष्टि से हर कोने को निहारती जा रही थी। साफ सुंदर स्वच्छ लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय स्वच्छता की गवाही दे रहे थे

सच्चे अर्थों में 'पर्यावरण प्रहरी'

यह पूरा परिसर इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उन्हें ऐसे ही 'पर्यावरण प्रहरी' नहीं कहा जाता। उनकी इसी निस्वार्थ साधना, अटूट लगन और दूरदर्शिता का परिणाम है कि उन्हें राजकीय पुरस्कार से नवाजा गया है। उन्हें देखना और उनके काम को महसूस करना अपने आप में एक प्रेरणा है। मैं उनसे हमेशा कुछ न कुछ सीखती रहती हूँ। आज उनके इस 'ज्ञान और प्रकृति के मंदिर' को देखकर मेरा मन असीम तृप्ति और गर्व से भर गया। यह यात्रा मेरे दिल के सबसे करीब रहेगी। इनकी एक छात्रा ने अचानक से जब मालती फूलों से बना सुंदर सा साधारण सा ताज मेरे सिर पर रखा तो मैं अपने आप को अत्यंत सम्मानित महसूस कर रही थी प्यारी सी बच्ची के निश्छल प्रेम से मैं शराबोर हो गई ।

जिला विशेष: बाँका

लेख - श्री सुमित कुमार
प्राथमिक विद्यालय डारीडीह,
भभुआ, कैमूर

शिक्षा से पर्यावरण जागरूकता

पर्यावरण संरक्षण की मजबूत नींव विद्यालयों से ही रखी जा सकती है। यदि बचपन से ही विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना जगाई जाए, तो वे आगे चलकर पर्यावरण के सच्चे प्रहरी बन सकते हैं। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को समाज और प्रकृति के प्रति उनके उत्तरदायित्व का अहसास कराना भी है। इसी सोच को धरातल पर उतारने का कार्य कर रहे हैं बिहार के समर्पित शिक्षक **मुकेश कुमार**।

मुकेश कुमार वर्तमान में बांका जिले के उत्क्रमित उच्च विद्यालय (कोरिया, चांदन) में पदस्थ हैं और विद्यालय के **'इको क्लब'** के फोकल शिक्षक के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। इससे पूर्व, पीएम श्री +2 प्रोजेक्ट कन्या उच्च विद्यालय (तुलसिया, दिघलबैंक, किशनगंज) में पदस्थापना के दौरान भी उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अनेक सराहनीय कार्य किए। साथ ही, उन्होंने प्रखंड स्तर पर इको क्लब के 'मास्टर ट्रेनर' के रूप में अन्य शिक्षकों और छात्रों को भी प्रेरित किया है।

व्यवहारिक गतिविधियों से जुड़ता पर्यावरण शिक्षण

पर्यावरण शिक्षा को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रखकर मुकेश कुमार ने इसे छात्रों की दिनचर्या और व्यवहार से जोड़ने का निरंतर प्रयास किया है:

पर्यावरण संवर्धन: उनके नेतृत्व में नियमित वृक्षारोपण, पौधों की नियमित देखभाल, स्वच्छता अभियान, प्लास्टिक मुक्त परिसर, तथा जल एवं जैव विविधता संरक्षण जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

एक पेड़ माँ के नाम: इस विशेष अभियान के अंतर्गत उन्होंने विद्यार्थियों को न केवल पौधे लगाने, बल्कि उनके साथ एक आत्मीय संबंध बनाकर उनकी देखभाल करने के लिए प्रेरित किया।

जन-जागरूकता अभियान: चित्रकला, भाषण, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं और जन-जागरूकता रैलियों के जरिए पर्यावरण संरक्षण का संदेश विद्यालय से निकालकर पूरे समाज तक पहुँचाया गया।

डिजिटल एवं सामाजिक जुड़ाव: सोशल मीडिया, विद्यालय पत्रिका और डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके वे पर्यावरण संबंधी उपयोगी जानकारी साझा करते हैं, ताकि अधिक से अधिक लोग इस हरित अभियान से जुड़ सकें।

एक हरित और सतत भविष्य की ओर

मुकेश कुमार का मानना है कि यदि देश का प्रत्येक शिक्षक पर्यावरण शिक्षा को अपने शिक्षण का अनिवार्य हिस्सा बना ले, तो एक स्वच्छ, हरित और सतत (Sustainable) भविष्य का निर्माण निश्चित रूप से संभव है।

जिला विशेष: मधेपुरा

लेख - अविनाश कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय लालपट्टी,
सिंहेश्वर, मधेपुरा

प्रकृति के आँगन में शिक्षा का उपवन

मेरे लिए **इको क्लब फॉर Mission LiFE** केवल एक विद्यालयी गतिविधि नहीं, बल्कि बच्चों के साथ मिलकर देखा गया एक सपना है। जब मैंने महसूस किया कि पर्यावरण संरक्षण किताबों तक सीमित होकर अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकता, तभी मैंने विद्यालय में इको क्लब का गठन किया। शुरुआत कुछ बच्चों से हुई, लेकिन आज यह पूरा विद्यालय का अभियान बन चुका है।

मैं हमेशा बच्चों से कहता हूँ कि **"धरती हमें विरासत में नहीं मिली, बल्कि आने वाली पीढ़ियों से उधार मिली है।"** शायद यही बात उनके मन को छू गई। आज वही बच्चे अपने लगाए पौधों को नाम देकर उनकी देखभाल करते हैं, पानी और बिजली बचाते हैं, प्लास्टिक का कम उपयोग करते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं।

सबसे अधिक खुशी तब होती है, जब मेरे साथ मेरे प्यारे प्यारे बच्चे हाथों में तख्तियाँ लेकर गली-गली और गाँव-गाँव जागरूकता रैली निकालते हैं। "एक पेड़ माँ के नाम", वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, पोस्टर निर्माण, पर्यावरण शपथ और जनजागरूकता कार्यक्रम अब हमारे विद्यालय की पहचान बन चुके हैं। कई बार गाँव के लोग बच्चों की बातें सुनकर वहीं एक पौधा लगाने का संकल्प लेते हैं। वही पल मुझे विश्वास दिलाते हैं कि बदलाव संभव है। आज मुझे गर्व है कि मेरे इको क्लब के सिपाही केवल पर्यावरण के बारे में पढ़ते नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन में जीते हैं। यही मेरे शिक्षकीय जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि और सबसे सुंदर पहचान है।

ECO Club

अविनाश कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय लालपट्टी,
सिंहेश्वर, मधेपुरा

जिला विशेषः बक्सर

लेख - दुर्गमांगे उपाध्याय
नव० प्रा० वि० बिठ्ठलपुर
बक्सर

बेटी और बिरवा

"दहेज कहाँ से लईबै माई,

हमके दे दे तू जहर खाकर सूत जाई"

मेरे विद्यालय के प्रांगण में जब बच्चियों ने यह गीत गाया, तो उनकी आवाज़ में दर्द था और आँखों में प्रश्न। वह गीत मेरे हृदय में उतर गया और मुझे रुला गया। मैंने बच्चियों को अपने पास बुलाया और कहा: "बेटियों, आंसू मत बहाओ। तुम पढ़ो-लिखो। अपने पैरों पर खड़ी हो जाओ। जिस दिन तुम आत्मनिर्भर बन जाओगी, उस दिन न तुम किसी पर बोझ रहोगी, न तुम्हें दहेज के नाम पर तोला जाएगा। शिक्षा ही तुम्हारा सबसे बड़ा आभूषण है।"

मैंने कहा - "दूसरी बात। आज से तुम सब प्रकृति से दोस्ती करो। हर बेटी अपने जन्मदिन पर एक पेड़ लगाएगी। सोचो, जिस दिन तुम पैदा हुई थीं, उस दिन यदि एक पेड़ लगाया गया होता, तो आज वह बड़ा होकर तुम्हारी पढ़ाई में, शादी में, हर जरूरत में सहायक होता। बेटी और वृक्ष - दोनों को पालना पड़ता है, और दोनों ही जीवन देते हैं।

उसी दिन से मैंने निश्चय किया कि मैं भी प्रकृति की सेवा करूंगा। पिछले लगभग एक दशक से मैं अपने विद्यालय और आसपास के पोषक क्षेत्र में प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु में 100 से अधिक पौधे दान में देता हूँ। पर मैं मनमाने पौधे नहीं देता। मैं हर साल बच्चों से पूछता हूँ - "बताओ, इस बार तुम कौन सा पेड़ लगाना चाहते हो?"

जब बच्चे मुझे अपनी सूची सौंप देते हैं, तो मैं नर्सरी से वही पौधे मंगाकर उन्हें देता हूँ। कोई आम मांगता है, कोई अमरूद, कोई नीम, कोई पीपल। और फिर होता है चमत्कार। वह पौधा अब "सर का दिया हुआ" नहीं रहता, वह **"मेरा अपना पेड़"** बन जाता है। बच्चे प्रतिदिन उसे पानी देते हैं, उसकी रखवाली करते हैं। समय के साथ वे पौधे बड़े होते हैं, हरे-भरे होते हैं, और आज उन पर फल भी लटकते हैं।

आज विद्यालय के चारों ओर देखता हूँ तो मन भर आता है। मेरे द्वारा दिए गए सभी पौधे जीवित हैं। वे लहरा रहे हैं, छाया दे रहे हैं और फल दे रहे हैं। मानो धरती माँ भी मेरे इस छोटे से प्रयास को स्वीकार कर रही हो।

मेरा दर्शन

प्रकृति ने हमें बिना मांगे सब कुछ दिया है - हवा, पानी, फल, छाया। तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम उसे कुछ लौटाएं। मेरे लिए पेड़ लगाना कोई अभियान नहीं, यह पूजा है। यह मेरी प्रकृति के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। यह मेरी सच्ची सेवा है। मेरा विश्वास है - जिस दिन हर घर में बेटी के जन्म पर एक पेड़ लगेगा, उस दिन यह "जहर वाला गीत" हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। क्योंकि **जब बेटी शिक्षित होगी और धरती हरी होगी, तभी समाज सच में खुशहाल होगा।**

नन्हें प्रकृति प्रहरी

संकलन - निवेदिता चौरसिया
नव० प्रा० वि० हरिजन टोला, कलगीगंज, भागलपुर

उर्दू प्रा० विद्यालय, पिपरा देवस, बरौनी, बेगूसराय

मध्य विद्यालय सैनो, जगदीशपुर, भागलपुर

NPS मरा हरलोचनपुर सकरी मुज़फ्फरपुर

रा० एल० एम० सी० के० उ० मा० वि० खैरा, रज़ौन, बाँका

उत्क्रमित मध्य विद्यालय औराही मधेपुरा

NPS बलरा दुसाद टोला, बरौनी

प्राथमिक विद्यालय मजगामा, पूर्णिया

मध्य विद्यालय पिस्ता, जगदीशपुर, भागलपुर

कन्या मध्य विद्यालय पर्दा, आरा

सर्वोदय मध्य विद्यालय, रामगढा,सिवान

प्राथमिक विद्यालय चैता, बहोरी, रोहतास

अभ्यास मध्य विद्यालय, शेरवपुरा

प्राथमिक विद्यालय, रूपौली, पूर्णिया

रा० बुनियादी वि० वंदावन कन्या, पश्चिम चंपारण

म० वि० सितुहर, मुंगेर

नन्हें प्रकृति प्रहरी

संकलन - मिथलेश कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय डीह
गोरीहार, सकरा, मुजफ्फरपुर

NPS खटौना यादव टोला, पताही, पूर्वी चंपारण

मध्य विद्यालय दिन नगर भागलपुर

कन्या प्राथमिक विद्यालय, एकसिंधा, बांका

प्रो० म० वि० तुरकौलिया उर्दू, सैरया, मुजफ्फरपुर

मध्य विद्यालय शर्फुद्दीनपुर बोचहा मुजफ्फरपुर

SVN आदर्श वि० पर्रा बीरपुर बेगूसराय

मध्य विद्यालय मचकना, हुसैनगंज

मध्य विद्यालय थाडा, पूर्णिया

उत्क्रमित मध्य विद्यालय औराही मधेपुरा

मध्य विद्यालय घोघाडाबर चांदन बांका

रा० प्रा० मकतब कबई नयाटोल विद्यापतिनगर

नव० प्रा० वि० राजडीह- 2 जमुई

उत्क्रमित मध्य विद्यालय औराही मधेपुरा

मध्य विद्यालय अरिहाना कटिहार

मध्य विद्यालय कोआही रून्नीसैदपुर, सीतामढ़ी

काव्य से पर्यावरण जागरूकता

नीरज कुमार झा
उ० उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भवानीपुर नारायणपुर भागलपुर

क्यों रूठ गई है हमसे प्रकृति

भीषण गर्मी ने किया है जीना मुहाल
कभी असामयिक वर्षा,
कभी अतिवृष्टि
और कभी अनावृष्टि।
क्यों रूठ गई है हमसे प्रकृति?
आज ग्लोबल हुआ है लाल,
ग्लेशियर पिघला है हालम- हाल।
सुबह होते ही हो जा रहा दोपहर।
ओजोन परत का क्षय दिखा रहा
दिन का पहला प्रहर।
पहले तो दूध जैसे सफेद दिखती थी नदी,
इसने क्यों रूप है अपना बदला।
बसंती बयार भी उमंग से रहित है।
क्यों रूठ गई है हमसे प्रकृति?
शहरीकरण खा गया है हरियाली को,
अब भी बन रहा है गगनचुम्बी इमारत।
पॉलिथीन और कूड़े के ढेर ने है
प्रकृति की सुंदरता छीनी।
विषाक्त जल पीने को मजबूर इंसान।
क्यों रूठ गई है हमसे प्रकृति?
हमने पेड़ों को नहीं अपने हाथों को काटा है।
कल-कल बहती नदियों को भी समेटा है।
मिट्टी की सोंधी सुगन्ध को विषाक्त बनाया है।
हमने पेड़ नहीं एसी लगाया है।
हमने पर्यावरण दिवस मन से नहीं मनाया है।

The earth doesn't have a backup plan.

It's not just weather. It's our future.

CLIMATE CHANGE IS REAL

SAVE EARTH

SAVE THE PLANET

STOP CLIMATE CHANGE

THE TIME TO ACT IS NOW

काव्य से पर्यावरण जागरूकता

रंजना कुमारी
JUHS खम्हार विभूतिपूर
समस्तीपुर

प्रकृति प्रहरी

धरती करे सदा पुकार,
सुन लो मनुष्य मेरी दरकार।
बड़े-बड़े महलों को बनाकर,
मत करो मुझ पर प्रहार।
पेड़ पौधों को मत काटो,
मत उजाड़ो मेरा संसार ।

हरियाली ही मेरे जीवन का आधार,
इसी से चलता सब संसार ।
सड़के ,नदिया ,पर्वत मेरे ,
मत करो इनका तिरस्कार।
यदि इन्हें तुम नष्ट करोगे ,
कैसे बचेगा यह संसार ।

मत करो युद्ध और विनाश,
मत फैलाओ इतना संहार ,
धरती की बस यही गुहार।
बचाओ मुझको हर घड़ी ,हर पल
सोचो जरा ,समझो जरा ,
क्या होगा आने वाला कल।
यदि प्रकृति का साथ छोड़ोगे ,
सूना हो जाएगा हर पल।

धरती की बस यही पुकार,
कर लो प्रकृति का आदर - सम्मान।

बिहार सरकार की योजनाएं

लेख - मोहम्मद मेराज
रा० प्रा० मकतब कबई नयाटोल
विद्यापतिनगर, समस्तीपुर

निजी तालाबों का जीर्णोद्धार की योजना

निजी क्षेत्र के ऐसे तालाब, जिनमें जीर्णोद्धार की आवश्यकता है, उनकी उड़ाही द्वारा जलधारण क्षमता बढ़ाना, जिससे मत्स्य उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हो सके। योजनान्तर्गत चयनित तालाब में गाद की कटाई/सफाई, बाँध की मरम्मति तथा इनलेट/आउटलेट (पाइप एवं तार की जाली सहित) का कार्य किया जाएगा। तालाब से निकाली गई मिट्टी से ही बाँध की मरम्मति की जाएगी।

तालाब की उड़ाही/जीर्णोद्धार होने से निजी क्षेत्र के मत्स्य पालकों को निम्न लाभ होंगे

- गाद की सफाई से तालाब की जलधारण क्षमता बढ़ेगी, जिससे मत्स्य उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि होगी।
- निकाली गई मिट्टी से बाँध की मरम्मति होगी, जिससे तालाब की सुरक्षा के साथ बाँध पर अन्य कृषि कार्य हेतु भूमि उपलब्ध होगी।
- जालीयुक्त इनलेट/आउटलेट से तालाब अवांछित जलीय जीव एवं गंदगी से सुरक्षित रहेगा, जिससे मत्स्य उत्पादन में लाभ होगा।

तालाब जीर्णोद्धार का मॉडल:-

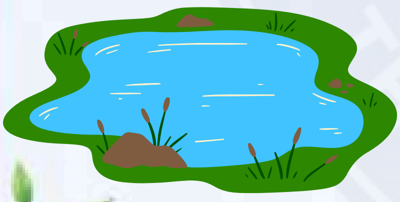

मॉडल-1

तालाब जीर्णोद्धार का मॉडल:- पुराने निजी तालाबों का जीर्णोद्धार - निजी स्वामित्व के ऐसे पुराने तालाब, जिनमें विगत पाँच वर्षों में किसी सरकारी योजना से उड़ाही नहीं हुई हो, लाभार्थी के शपथ पत्र के आधार पर जीर्णोद्धार हेतु चयनित किए जा सकते हैं।

मॉडल-2

योजनान्तर्गत निर्मित निजी तालाबों का जीर्णोद्धार:- योजनान्तर्गत निर्मित तालाबों में 05 वर्षों के पश्चात् ही जीर्णोद्धार योजना का लाभ देय होगा।

Note- प्राकृतिक आपदा (बाढ़) से क्षतिग्रस्त तथा स्थानीय प्रशासन द्वारा आपदा घोषित पंचायत/प्रखण्ड में स्थित तालाबों के चयन में पाँच वर्षों की बंदिश को उप मत्स्य निदेशक की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा शिथिल किया जा सकता है।

CLICK HERE

आवेदन का सृजन एवं लाभुकों का चयन:-

1. आवेदन के साथ स्व-अभिप्रमाणित दो पासपोर्ट साइज फोटो, फोटोयुक्त पहचान पत्र, आधार कार्ड/राशन कार्ड/मतदाता पहचान पत्र, मोबाइल नम्बर, बैंक खाता संख्या, बैंक शाखा, IFSC कोड, जाति प्रमाण-पत्र (अति पिछड़ी जाति/अनु०जाति/जनजाति के लिए), अद्यतन राजस्व रसीद, भूमि स्वामित्व प्रमाण-पत्र अथवा 09 वर्ष का लीज एकरारनामा (₹1000 नन-जुडिशियल स्टाम्प पर), जमीन का नक्शा आदि संलग्न करना होगा।

2. प्रस्तावित भूमि/तालाब का पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ भी आवेदन के साथ देना होगा। फोटो में लैंडमार्क/विशेषक चिन्ह स्पष्ट होना चाहिए, ताकि स्थल निरीक्षण के समय तालाब की आसानी से पहचान हो सके।

3. पट्टे/लीज पर ली गई जमीन में पट्टेदार द्वारा स्वयं के खर्च से निर्मित तालाब के जीर्णोद्धार पर योजनान्तर्गत लाभ देय होगा। मालिक द्वारा निर्मित तालाब को बाद में लीज पर लेने की स्थिति में जीर्णोद्धार का लाभ मालिक को ही देय होगा। इस संबंध में लाभुक को शपथ पत्र देना होगा।

अनुदान

निजी तालाब के जीर्णोद्धार हेतु ₹6.00 लाख/हेक्टेयर इकाई लागत निर्धारित एवं राज्य तकनीकी समिति से अनुमोदित है। अन्य वर्ग को 30% तथा अति पिछड़ी जाति/अनु०जाति/जनजाति को 40% सब्सिडी देय होगी। शेष राशि लाभार्थी द्वारा बैंक ऋण/स्वयं के स्रोत से वहन की जाएगी। सब्सिडी दो किस्तों में दी जाएगी।

1. तालाब के जीर्णोद्धार में 50% मिट्टी खुदाई पूरी होने पर, लाभार्थी के दावा पत्र एवं क्षेत्रीय प्रभारी/विभागीय अभियंता के स्थल निरीक्षण प्रतिवेदन के आधार पर कुल देय सब्सिडी की 50% राशि प्रथम किस्त के रूप में दी जाएगी। शेष कार्य पूर्ण होने एवं मापी पुस्तिका के आधार पर द्वितीय किस्त में शेष सब्सिडी का भुगतान किया जाएगा।

2. दोनों किस्तों का भुगतान लाभार्थी के दावा पत्र एवं क्षेत्रीय प्रभारी की अनुशंसा के आधार पर, उप मत्स्य निदेशक की अध्यक्षता में गठित समिति के अनुमोदन के बाद एक पक्ष के अंदर सीधे लाभुक के बैंक खाते में किया जाएगा।

अन्य क्रियान्वयन अनुदेश:-

1. योजनान्तर्गत प्रत्येक निजी मत्स्य तालाब के जीर्णोद्धार स्थल पर लाभार्थी द्वारा पक्का बोर्ड लगाना अनिवार्य होगा। बोर्ड 4 फीट ऊँचे लोहे के एंगल पर 4×3 फीट आकार की लोहे की चादर का होगा, जिस पर पेंट से विवरण अंकित किया जाएगा।

बोर्ड पर अंकित विवरणी का प्रारूप निम्न होगा-

बिहार सरकार
पशु एवं मत्स्य संसाधन (मत्स्य) विभाग
मत्स्य निदेशालय, पटना
योजना का नाम एवं वर्ष-
लाभुक का नाम एवं पता-
प्राक्कलित / लागत राशि –
सब्सिडी की राशि-
आच्छादित जलक्षेत्र

महत्वपूर्ण दिवस

तिथि	दिवस
फरवरी 2	विश्व आर्द्रभूमि दिवस
मार्च 3	विश्व वन्य जीव दिवस
मार्च 21	अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस
मार्च 22	विश्व जल दिवस
मार्च 23	विश्व मौसम विज्ञान दिवस
अप्रैल 22	अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस
मई 22	अंतर्राष्ट्रीय जैविक विविधता दिवस
जून 5	विश्व पर्यावरण दिवस
जून 8	विश्व महासागर दिवस
जून 17	विश्व मरुस्थलीकरण एवं सूखा रोकथाम दिवस
जुलाई 3	अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस
सितम्बर 16	ओजोन परत संरक्षण दिवस
सितम्बर 22	विश्व कार रहित दिवस
अक्टूबर 4	विश्व पशु कल्याण दिवस
अक्टूबर 30	खाद्य अपशिष्ट न्यूनीकरण दिवस
नवम्बर 6	अंतर्राष्ट्रीय वन एवं वृक्ष विनाश रोकथाम दिवस
नवम्बर 19	विश्व शौचालय दिवस
दिसम्बर 11	अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस

क्विज

1. ई-वेस्ट (E-Waste) उत्पादन के मामले में विश्व में भारत का कौन सा स्थान है?

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

2. 'जल प्रहरी क्लब' का मुख्य उद्देश्य क्या था?

A. विद्यालय में खेल गतिविधियाँ बढ़ाना B. बच्चों को तैराकी सिखाना C. विद्यालय में नए नल लगाना D. पानी की बर्बादी रोकना और जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना

3. निम्नलिखित में से कौन-सा ई-वेस्ट का उदाहरण है?

A. सूखे पत्ते B. सब्जियों के छिलके C. मोबाइल फोन D. लकड़ी

4. भारत में ई-वेस्ट (प्रबंधन) नियम, 2022 कब से लागू किए गए?

A. 15 अगस्त 2022 B. 26 जनवरी 2023 C. 1 अप्रैल 2023 D. 5 जून 2023

5. EPR का संबंध किससे है?

A. जल संरक्षण B. उत्पादक की विस्तारित जिम्मेदारी C. वृक्षारोपण अभियान D. डिजिटल शिक्षा

6.डिजिटल उपवास का क्या अर्थ है?

A. केवल भोजन छोड़ना B. एक निश्चित समय तक डिजिटल उपकरणों से दूरी बनाना C. विद्यालय जाना बंद करना D. केवल टेलीविजन देखना

7. पोषण वाटिका का एक प्रमुख लाभ क्या बताया गया है?

A. केवल विद्यालय की सुंदरता बढ़ाना B. विद्यालय में खेल का मैदान बनाना C.बिजली की खपत बढ़ाना D. कुपोषण को कम करने और बच्चों को स्वस्थ एवं जागरूक बनाने में मदद करना

8. बिहार में किस स्वदेशी घास को संकटग्रस्त (Endangered) सूची में अधिसूचित किया गया है?

A. सरकंडा B. दुब C. बाँस D. खस

9. बिहार सरकार की योजना के अनुसार निजी तालाब के जीर्णोद्धार हेतु प्रति हेक्टेयर इकाई लागत कितनी निर्धारित है?

A. 2 लाख B. 4 लाख C. 6 लाख D. 10 लाख

10. बक्सर के विपिन कुमार जी को किस नाम से जाना जाता है?

A. जल नायक B. नीम योद्धा. C. पीपल प्रहरी. D. प्रकृति प्रहरी

TEACHERS OF BIHAR

प्रकृति प्रहरी (अंक 3) विशेष

प्रकृति प्रहरी के अगले अंक(3) में आने वाले कुछ विषयों को आप सभी के साथ साझा किया जा रहा है :

- Seed Ball Project : बीज गोला कार्यक्रम
- अंधविश्वास और प्रकृति
- कबाड़ से जुगाड़
- इको फ्रेंडली विद्यालय की कहानी
- पर्यावरण नायक
- नन्हें प्रकृति प्रहरी
- सीमेंट के ढेर बनते शहर
- चर्चित पर्यावरणीय घटनाएँ

नए आइडियाज आमंत्रित हैं

CLICK OR SCAN ME TO UPLOAD YOUR IDEA

TEACHERS OF BIHAR

पत्रिका संग्रह

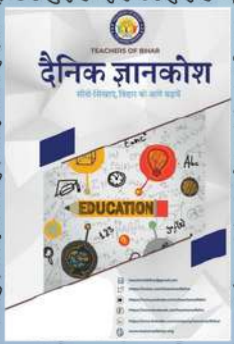

SCAN ME!

SCAN ME!

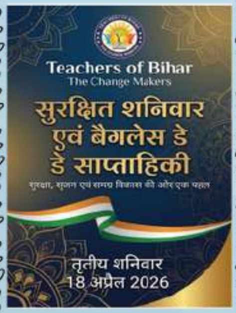

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

SCAN ME!

प्रकृति प्रहरी

अगर आप प्रकृति प्रहरी के रूप में अपने विद्यालय, समुदाय या अन्य स्थान पर किए कार्य पर्यावरण संरक्षण से आम जनमानस को जागरूक करना चाहते हैं तो प्रकृति प्रहरी पत्रिका आपको प्रदान कर रहा है वो मंच जहां से हम आपके प्रयास को जन-जन तक पहुंचाएंगे।

आपको यह अंक कैसा लगा? अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें -
https: https://forms.gle/aKuAFNmHqJAYs1Cx5

हमसे जुड़ने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें।

व्हाट्सएप से जुड़ने के लिए क्लिक करें

ईमेल: prakrtipraharitob@gmail.com
वेबसाइट: www.teachersofbihar.org/prakritiprahari

Facebook group @teachersofbihar

X @teachersofbihar

instagram @teachersofbihar

YouTube @teachersofbihar

Facebook@teachersofbihar
X@teachersofbihar
Instagram@teachersofbihar
YouTube@teachersofbihar